हज निर्देशिका

हज के अर्कान ४ हैं :
इहराम, अरफा में ठहरना, तवाफे इफ़ाज़ा, और सफा व मर्वा के बीच सई

हज के वाजिबात ७ हैं :
मीक़ात से इहराम बांधना, सूरज डूबने तक अरफा में ठहरना, मुज्दलिफा में रात गुज़ारना, ११,१२ और १३ की रात मिना में गुज़ारना, जम्रात की रम्य करना, बाल मुंड़वाना या कटवाना, तवाफ़े विदा,अ करना।

हज की शराएत :
इस्लाम, अक़्ल, बुलूग़त, आज़ादी, और इस्तिता'अत (स्वास्थ एवं धन दौलत से हज करने पर समर्थ होना और औरत के लिए महरम (ऐसा नातेदार व्यक्ति जिस से जीवन में कभी भी शादी जायज़ न हो) का साथ में होना हज की शराएत में से है)

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़र्माया : कि जिस किसी ने हज किया और हज करते समय उस ने न तो जिमा'अ किया और ना ही ग़लत काम किए तो वह नौमौलूद बच्चे की तरह अपने गुनाहों से पवित्र होकर लौटता है।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़र्माया : मक़्बूल हज का सवाब जन्नत ही है।

हज्जे तमत्तु'अ

- **मीक़ात** — उम्रे के लिए इहराम बांधना (१)
- **हरम** — उम्रे के लिए तवाफ़ करना
- **हरम** — उम्रे के लिए सई करना
- बाल कटवाना
- इहराम से हलाल हो जाना
- ८ को हजके लिए इहराम बांधना (४) और मिना जाना

हज्जे क़िरान

- **मीक़ात** — हज और उम्रे के लिए इहराम बांधना (२)
- **हरम** — तवाफ़े कुदूम करना (सुन्नत है)
- **हरम** — हज के लिए सई करना, तवाफ़े इफ़ाज़ा के बाद भी कर सकते हैं।
- इहराम में बाक़ी रहना और प्रतिबन्धित चीज़ों से बचते रहना
- ८ ज़िल्हिज्जा को सूरज निकलने के बाद मिना जाना

हज्जे इफ़्राद

- **मीक़ात** — हज के लिए इहराम बांधना (३)

हज्जे इफ़्राद और क़िरान करने वाले ८ तारीख़ को बेग़ैर तवाफ़े कुदूम और सई किए मिना जासकते हैं मगर उनहे तवाफ़े इफ़ाज़ा के बाद सई करनी होगी

चेतावनी :
जिस किसी ने किसी रुक्न को छोड़ दिया तो रुक्न को किए बिना उसका हज नहीं होगा, और जिस ने वाजिब को छोड़ा तो उसे दम देना होगा और उस का हज सहीह होजाएगा, और जिस ने सुन्नत छोड़ी तो उस पर कफ्फारः वग़ैरः नही है।

८ ज़िल्हिज्जा
मिना
अपने अपने समय पर क़स्र के साथ ५ वक्त की नमाज़ पढ़ना और ९ ज़िल्हिज्जा को सूरज निकलने के बाद अरफ़ा को जाना

९ ज़िल्हिज्जा
अरफ़ा
ज़ुह्र के समय, ज़ुह्र और अस्र की नमाज़ को क़स्र के साथ पढ़ना, सुरज डुबने तक अर्फ़ा में ठहरना और दुआ करते रहना, सूरज डूबने के बाद मुज़्दलिफ़ा जाना

९ ज़िल्हिज्जा
मुज़्दलिफ़ा
मुज़्दलिफ़ा पहुंच कर मग़्रिब और इशा की नमाज़ क़स्र और जम'अ के साथ पढ़ना, यहीं पर रात गुज़ारना और १० तारीख़ को खूब सफ़ेदी होजाने पर मिना जाना

१० ज़िल्हिज्जा
मिना
जम्रए अक़्बा को सात कंकरियों से मारना

- हज्जे तमत्तु'अ
- हज्जे क़िरान
- हज्जे इफ़्राद

१० ज़िल्हिज्जा
मिना
तमत्तु'अ व क़िरान करने वालों के लिए क़ुर्बानी करना

१० ज़िल्हिज्जा
मिना
बाल मुंडवाना या कटवाना, मुंडवाना अफ़्ज़ल है

१० ज़िल्हिज्जा
इहराम निकाल कर सिला हुवा कपड़ा पहनना
पहला तहल्लुल

१० ज़िल्हिज्जा
हरम
तवाफ़े इफ़ाज़ा (हज का तवाफ़) करना
दूसरा तहल्लुल

१० ज़िल्हिज्जा
हरम
हज की सई करना

हरम
अगर तवाफ़े कुदूम के साथ सई नहीं की है तो हज की सई करना

ऐयामे तशरीक़

मिना
मिना लौट कर ११,१२ और १३ की रात गुज़ारना

११ ज़िल्हिज्जा
मिना
ज़वाल के बाद सिलसिलावार तिनों जम्रों को सात सात कंकरियों से मारना

१२ ज़िल्हिज्जा
मिना
ज़वाल के बाद सिलसिलावार तिनों जम्रों को सात सात कंकरियों से मारना

- जल्दी करना — यदि जलदी लौटना चाहते हैं तो १२ तारीख़ को सूरज डूबने से पहले लाज़िमी मिना से निकल जाना होगा
- देर करना

१३ ज़िल्हिज्जा
मिना
ज़वाल के बाद सिलसिलावार तिनों जम्रों को सात सात कंकरियों से मारना

हरम
वापसी के समय तवाफ़े विदा'अ करना

वापसी